दिशा

अंक: 12, मई 2020 से मार्च 2021 तक, गृह पत्रिका, अं.वि./इसरो मु.

भारतीय अंतरिक्ष अनुसंधान संगठन, मुख्यालय
अंतरिक्ष विभाग, भारत सरकार

डॉ. कै. शिवन

बी.एम.ए. विशिष्ट जूरी अवार्ड 2018-19 से सम्मानित

कर्नाटक के राज्यपाल वजुभाई वाला ने इसरो के अध्यक्ष डॉ. कै. शिवन को डॉक्टर ऑफ साईंस मानद् डॉक्टरेट सम्मानित किया। विश्वेश्वरैया प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय से उन्हें डॉक्टरेट उपाधि दी है। हमारे अंतरिक्ष कार्यक्रम को परिभाषित करने में इसरो की भूमिका तथा देश में इसने जो सामाजिक भूमिका अदा की है, राज्यपाल ने उसकी अत्यंत प्रशंसा की।

भारत सरकार
अन्तरिक्ष विभाग
अन्तरिक्ष भवन, न्यू बी ई एल रोड
बेंगलूर – 560 094. भारत
तार : स्पेस फैक्स : +91-80-2351 1829
दूरभाष : +91-80-2341 6393

सत्यमेव जयते

GOVERNMENT OF INDIA
DEPARTMENT OF SPACE
Antariksh Bhavan, New BEL Road
Bangalore - 560 094, India.
Grams : Space Fax : +91-80-2351 1829
Telephone : +91-80-2341 6393
e-mail : sandhyavs@isro.gov.in

संध्या वेणुगोपाल शर्मा, भा.प्र.से.
Sandhya Venugopal Sharma, IAS
संयुक्त सचिव / Joint Secretary

संदेश

अंतरिक्ष विभाग/इसरो मुख्यालय की गृह-पत्रिका "दिशा" को अंक-दर-अंक बेहतरीन बनाने का हमारा प्रयास जारी है। आज के इस प्रौद्यौगिकी के युग में सूचना का प्रचार-प्रसार बड़ी ही आसानी एवं सुगमता से किया जा रहा है। राजभाषा विभाग द्वारा भी इस ओर सराहनीय कदम उठाया गया है। पत्रिकाओं को डिजीटल रूप में प्रकाशित करना अपने-आप में एक क्रांतिकारी कदम है।

मुझे विश्वास है कि इस पत्रिका में छपी सामग्री से पाठकों को आनंद प्राप्त होगा और साथ-ही-साथ उनका ज्ञान भी अद्यतित होगा।

शुभकामनाओं सहित।

(संध्या वेणुगोपाल शर्मा)
संयुक्त सचिव, अं.वि

संपादक की कलम से...

'दिशा' पत्रिका का एक और बेहतरीन अंक आपको सौंपते हुए बड़ी प्रसन्नता हो रही है। यह आप सभी के अथक प्रयासों व सहयोग का परिणाम ही है कि आज 'दिशा' सभी पाठकों के दिल में अपना स्थान बना चुकी है। 'दिशा' के पिछले अंकों पर प्राप्त विभिन्न विभागों की उत्साहवर्धक प्रतिक्रियाएं इस बात का प्रमाण है। भविष्य में भी आप सभी का सहयोग इसी तरह प्राप्त होता रहे,

इसी शुभाकांक्षा के साथ,

(डॉ. पी.के. जैन)
मुख्य संपादक 'दिशा'

"दिशा" पत्रिका अपने आप में अनेक विषयों को समाविष्ट किए हुए है। साहित्य की विभिन्न विधाओं को इसमें स्थान दिया गया है। संपादक मंडल की यह कोशिश होती है कि हर बार इसका एक अलग ही रूप पाठकों के समक्ष प्रस्तुत हो, इसलिए बड़ी ही सावधानी एवं मेहनत से लेखन सामग्री का चयन तथा प्रकाशन किया जाता है। इस अंक में भी पाठकों को अपार हर्ष और संतोष का अनुभव होने वाला है। पूरी कोशिश की गई है कि सभी प्रकार की साहित्यिक सामग्री से 'दिशा' के इस अंक को सजाया जाय।

मुझे पूर्ण विश्वास है कि 'दिशा' के इस अंक को पढ़कर आप सभी संतुष्ट होंगे और साथ ही यह भी अनुरोध है कि अपनी प्रतिक्रिया एवं सुझाव भेजना न भूलें, ताकि हम भविष्य में और अधिक बेहतरीन अंक आप सबके समक्ष प्रस्तुत कर सकें।

शुभकामनाओं सहित...

सरला

(सरला)
संयुक्त निदेशक (रा.भा.)

मई 2020 – मार्च 2021 अंक-12

दिशा

अंतरिक्ष विभाग की गृह-पत्रिका

मुख्य संरक्षक
डॉ. कै. शिवन

संरक्षक
श्रीमती संध्या वेणुगोपाल शर्मा

संपादक मंडल

मुख्य संपादक
डॉ .पी.के .जैन
सरला

संपादक सदस्य
डॉ. राजीव जायसवाल
बिपुल दास
डॉ. महेश्वर घनकोट

संपादन सहयोग
रश्मि ठाकुर
वीणा गुणवंत माटे
गुरूप्रसाद यादव
अम्बिका द्विवेदी
प्रत्युष कुमार
निशांत कुमार शर्मा
जीवन कुमार सिन्हा

अपने सुझाव एवं प्रतिक्रिया भेजें
संपादक मंडल 'दिशा'
अंतरिक्ष विभाग/इसरो मु.
अंतरिक्ष भवन
न्यू बी.ई.एल. रोड, बेंगलूरु- 560 094

इस अंक में...

	पृ.सं.
लेख	
• भारत रत्न - महामना पं. मदनमोहन मालवीय	1
• आहार पर ध्यान दें, हर मौसम स्वस्थ रहें	4
• सब दिन होत न एक समान	5
• इंकार	6
• पासवर्ड सिर्फ पासवर्ड नहीं	7
• जन्म होयसला राज्य का	9
• प्राकृतिक कला का अनुपम उदाहरण – मधुबनी पेंटिंग	12
• चित्रदुर्ग की यात्रा	15
कविता	
• प्यालियों में शब्द के, विराट आ सकता नहीं	17
• छोटे आदमी से बड़ा आदमी	18
• जिंदगी	19
• जिंदगी के प्रति आभार	20
• भ्रष्टाचार मुक्त भारत	21
• पेन की पैनी जुबां	22
स्वाद	
• एवोकाडो (बटरफ्रुट) शेक	23
राजभाषा संबंधित	24
गतिविधियाँ	27
शुभकामनाएँ	34
सुस्वागतम्	35
प्रतिक्रिया	37
पुरस्कार	39

पत्रिका में अभिव्यक्त विचारों और मतों से संपादक मंडल का सहमत होना आवश्यक नहीं है। हिंदी अनुभाग/अंतरिक्ष विभाग ,इसरो मु .की अनुमति के बिना इस पत्रिका की कोई भी रचना किसी प्रकार से उद्धृत नहीं की जानी चाहिए।

केवल आंतरिक परिचालन के लिए

भारत रत्न - महामना पं. मदनमोहन मालवीय

श्री तपन कुमार पांडेय
उच्च श्रेणी लिपिक, अं.वि.

भारत के इतिहास में कुछ ऐसे मनीषी हुए हैं, जिनकी विद्वता, प्रतिष्ठा एवं कृतित्व का लोहा पूरा राष्ट्र मानता है। इसमें से महामना का नाम अग्रणी भूमिका में रहा है।

महामना मदन मोहन मालवीय जी का जन्म प्रयागराज (उत्तर प्रदेश) में 25 दिसंबर 1861 को पं. ब्रजनाथ व मूनादेवी के यहाँ हुआ था। वे अपने माता-पिता से जन्में कुल सात भाई बहनों में पाँचवें पुत्र थे। मध्य भारत के मालवा प्रान्त से प्रयाग आ बसे उनके पूर्वज मालवीय कहलाते थे। आगे चलकर यही जातिसूचक नाम उन्होंने भी अपना लिया।

पांच वर्ष की उम्र में उनकी शिक्षा प्रारंभ हुई और उन्हें महाजनी स्कूल भेज दिया गया। वर्ष 1884 में उन्होंने कलकत्ता विश्वविद्यालय से बी.ए. की शिक्षा पूरी की और 40 रुपये मासिक वेतन पर इलाहाबाद जिले में शिक्षक बन गए। वे आगे एम.ए. की पढ़ाई करना चाहते थे, लेकिन आर्थिक स्थिति ठीक न होने के कारण ऐसा नहीं कर पाए।

एक राजनेता और स्वतंत्रता सेनानी के रूप में मदन मोहन के जीवन की शुरुआत वर्ष 1886 में कलकत्ता में दादाभाई नौरोजी की अध्यक्षता में आयोजित भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के दूसरे अधिवेशन में भाग लेने के साथ हुई। इस शुरुआती अधिवेशन में उनके द्वारा दिए गए भाषण को वहां मौजूद लोगों ने काफी सराहा। मदन मोहन के भाषण का असर महाराज श्रीरामपाल सिंह पर पड़ा। प्रभावित होकर महाराज ने उनसे साप्ताहिक समाचार पत्र हिंदुस्तान का संपादक बनने और उसका प्रबंधन संभालने की पेशकश की। ढ़ाई वर्ष तक संपादक के पद की जिम्मेदारी संभालने के बाद वे एल.एल.बी. की पढ़ाई के लिए इलाहाबाद वापस चले आए। 1891 में उन्होंने अपनी एल.एल.बी. की पढ़ाई पूरी की और इलाहाबाद जिला न्यायालय में प्रैक्टिस शुरू कर दी। वर्ष 1893 में प्रगति करते हुए वे इलाहाबाद उच्च न्यायालय में प्रैक्टिस करने लगे।

महामना मदन मोहन मालवीय काशी हिन्दू विश्वविद्यालय के प्रणेता तो थे ही, साथ ही इस युग के आदर्श पुरुष भी थे। पत्रकारिता, वकालत, समाज सुधार, मातृ भाषा तथा भारत माता की

सेवा में अपना जीवन अर्पण करने वाले इस महामानव ने जिस विश्वविद्यालय की स्थापना की उसमें उनकी परिकल्पना ऐसे विद्यार्थियों को शिक्षित करके देश सेवा के लिए तैयार करने की थी, जो देश का मस्तक गौरव से ऊँचा कर सके।

मालवीय जी सत्य, ब्रह्मचर्य, व्यायाम, देशभक्ति तथा आत्म त्याग में अद्वितीय थे। इन समस्त आचरणों पर वे केवल उपदेश ही नहीं दिया करते थे, अपितु स्वयं उनका पालन भी किया करते थे। वे अपने व्यवहार में सदैव मृदुभाषी रहे। कर्म ही उनका जीवन था।

जीवनकाल के प्रारम्भ से ही मालवीय जी राजनीति में रुचि लेने लगे और 1886 ई. में भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के दूसरे अधिवेशन में सम्मिलित हुए। मालवीय जी दो बार 1909 तथा 1918 ई. में कांग्रेस के अध्यक्ष हुए। 1902 ई. में मालवीय जी उत्तर प्रदेश 'इंपीरियल लेजिसलेटिव काउंसिल' के सदस्य और बाद में 'सेंट्रल लेजिसलेटिव असेंबली' के सदस्य चुने गये। मालवीय जी ब्रिटिश सरकार के निर्भीक आलोचक थे और उन्होंने पंजाब की दमन नीति की तीव्र आलोचना की।

वे कट्टर हिंदू थे, परंतु शुद्धि (हिंदू धर्म को छोड़कर दूसरे धर्म अपना लेने वालों को पुन: हिंदू बना लेना) तथा अस्पृश्यता निवारण में विश्वास करते थे। वे तीन बार हिंदू महासभा के अध्यक्ष चुने गये।

उनकी सबसे बड़ी उपलब्धि 1916 ई. में 'काशी हिंदू विश्वविद्यालय' की स्थापना है। विश्वविद्यालय स्थापना के लिए उन्होंने सारे देश का दौरा करके देशी राजाओं और जनता से चंदा प्राप्त किया।

'हिंदी साहित्य सम्मेलन' जैसी साहित्यिक संस्थाओं की स्थापना द्वारा 'काशी हिंदू विश्वविद्यालय' तथा अन्य शिक्षण केंद्रों के निर्माण द्वारा और सार्वजनिक रूप से हिंदी आंदोलन का नेतृत्व कर उसे सरकारी दफ़्तरों में स्वीकृत करा के मालवीय जी ने हिंदी की जो सेवा की उसे साधारण नहीं कहा जा सकता। उनके प्रयत्नों से हिंदी को यश विस्तार और उच्च पद मिला है। वे राष्ट्रभाषा हिंदी के प्रबल समर्थक थे। उनका मानना था की बिना हिंदी ज्ञान के देश की उन्नति संभव नहीं है उन्होंने हिंदी साहित्य सम्मेलन का प्रारूप प्रस्तुत किया तथा सन् 1910 में काशी में आयोजित प्रथम हिंदी साहित्य सम्मेलन की अध्यक्षता की। सम्मेलन में देश भर से 300 प्रतिनिधियों, विभिन्न प्रमुख समाचार पत्रों के 42 सम्पादक सम्मिलित हुए। इस अवसर पर अदालतों में नागरी लिपि का प्रचार, उच्च कक्षाओं में हिंदी का शिक्षण, हिंदी पाठ्यपुस्तकों का प्रणयन, राष्ट्र भाषा के रूप में हिंदी और नागरी का प्रयोग तथा स्टाम्पों पर हिंदी का प्रयोग आदि प्रस्ताव पारित किए गये। पं. श्यामबिहारी मिश्र ने मालवीय जी के संबंध में कहा था - हिंदी की जो उन्नति आज दिखाई देती है उसमें मालवीय जी के योगदान को प्राथमिकता देनी चाहिए। इस अवसर पर हमें इनसे बढ़कर दूसरा सभापति नहीं मिल सकता था। अपने अध्यक्षीय भाषण में मालवीय जी ने हिंदी अपनाने, सरल हिंदी का प्रयोग करने तथा अन्य भाषाओं के प्रचलित शब्द ग्रहण करने की अपील की। उनका कहना था कि

संस्कृत की पुत्री होने के कारण हिंदी प्राचीनतम् भाषा है।

उनके अग्रलेखों, भाषणों, तथा धार्मिक प्रवचनों के संग्रह ही उनकी शैली और ओजपूर्ण अभिव्यक्ति के परिचायक के रूप में उपलब्ध हैं। इसमें कोई संदेह नहीं कि वे उच्चकोटि के विद्वान, वक्ता और लेखक थे। पंडित मदन मोहन मालवीय ने स्वतंत्रता आंदोलन में भाग लेकर 35 साल तक कांग्रेस की सेवा की। मालवीयजी एक प्रख्यात वकील भी थे। एक वकील के रूप में उनकी सबसे बड़ी सफलता चौरी-चौरा कांड के अभियुक्तों को फांसी से बचा लेने की थी। चौरी-चौरा कांड में 170 भारतीयों को सजा-ए-मौत देने का ऐलान किया था, लेकिन महामना ने अपनी योग्यता और तर्क के बल पर 151 लोगों को फांसी के फंदे से छुड़ा लिया था।

शिक्षा के क्षेत्र में महामना का सबसे बड़ा योगदान काशी हिंदू विश्वविद्यालय के रूप में दुनिया के सामने आया था। उन्होंने एक ऐसी यूनिवर्सिटी बनाने का प्रण लिया था, जिसमें प्राचीन भारतीय परंपराओं को कायम रखते हुए देश-दुनिया में हो रही तकनीकी प्रगति की भी शिक्षा दी जाए। अंतत: उन्होंने अपना यह प्रण पूरा भी किया। यूनिवर्सिटी बनाने के लिए उन्होनें दिन-रात मेहनत की और 1916 में भारत को बी.एच.यू. के रूप में देश को शिक्षा के क्षेत्र में एक अनमोल तोहफा दे दिया।

मालवीय जी देश से निरक्षरता को दूर करने और शिक्षा के व्यापक प्रसार को देश की उन्नति के लिए आधारशिला मानते थे। अत:, उन्होंने शिक्षा पर विशेष बल दिया। वे स्त्री शिक्षा के प्रबल समर्थक थे।

भारत सरकार ने महामना के राष्ट्र निर्माण में योगदान को देखते हुए 24 दिसंबर 2014 को उन्हे भारत रत्न से सम्मानित किया।

- मालवीय जी ने बनारस हिंदु विश्वविद्यालय जैसे संस्थान के सपने को हकीकत में बदलने के लिए बहुत कठिन मेहनत की। जब उन्होंने यूनिवर्सिटी खोलने के लिए निजाम से आर्थिक मदद मांगी थी, तो निजाम ने मदद देने से इंकार कर दिया था। कहा जाता है कि पंडित मदन मोहन मालवीय ने इसके बाद फंड जुटाने के मकसद से मार्केट में अपने चप्पल की नीलामी की। संयोग की बात है कि चप्पल की बोली उसी निजाम ने लगाई और उसे बड़ी रकम देकर खरीदा।

आहार पर ध्यान दें, हर मौसम में स्वस्थ्य रहें

श्रीमती पद्मा एन.
व. परियोजना सहायक, इसरो मु.

"हर मौसम में स्वस्थ रहने के लिए आहार पर ध्यान देना जरूरी है, मौसम के अनुरूप क्या खाएँ और न खाएँ"।

शिशिर ऋतु (जनवरी से मार्च)

इस मौसम में घी, सेंधा नमक, मूंग दाल की खिचड़ी, मसूर की दाल, अदरक व कुछ गर्म तासीर वाला खाना खाएँ। तला-भुना खाना, ठंडी प्रकृतिवाला वादी भोजन और गैर मौसमी आहार से परहेज करें।

वसंत ऋतु (मार्च/अप्रैल से मई)

इस मौसम में जौ, चना, ज्वार, गेंहू, चावल, मूंग, अरहर, मूली, बथुआ, परवल, करेला, तोरी, केला, खीरा, हींग, मेथी, जीरा, आंवला, आदि कफनाशक पदार्थों का सेवन करें। आलू, उड़द, सिंघाड़ा, खट्टे-मीठे और चिकने पदार्थो का सेवन इस मौसम में हानिकारक है।

ग्रीष्म ऋतु (जून से जुलाई)

जौ, सत्तु, खीरा, दूध, ठंडे पदार्थ, कच्चे आम का पना, बथुआ, करेला, परवल, ककड़ी, खरबूज खाएं। ज्यादा तेल और मसालेवाला भोजन, नमकीन, चटपटे गरम व रूखे पदार्थो का सेवन ना करें।

वर्षा ऋतु (अगस्त से सितंबर)

पुराने चावल, पुराने गेंहू, खिचड़ी और हलके पदार्थो का सेवन करें।

शरद ऋतु (अक्तूबर से नवंबर)

गर्म दूध, घी, गुड़, मिश्री, चीनी, खीर, आंवला, नींबू, अनार, नारियल, मुनक्का, गोभी तथा शक्ति प्रदान करनेवाले पदार्थो का सेवन करें ।

हेमन्त ऋतु (दिसंबर से जनवरी)

सभी प्रकार के आयुर्वेदिक रसायन, दूध, खोए से बने पदार्थ, आलू, नए चावल, छाछ, अनार, तिल, बथुआ तथा जो भी सेहत बनानेवाले पदार्थ हों, ले सकते हैं। पुराने चावल, मोठ और शीतल प्रकृति के पदार्थ न लें ।

***

सब दिन होत न एक समान

प्रियांका अशोक जाधव
कनिष्ठ वैयक्तिक सहायक, इसरो मु.

प्रत्येक व्यक्ति के जीवन में हमेशा परिवर्तन होता रहता है। परिवर्तन ही जीवन का मूलमंत्र है। किसी भी व्यक्ति के जीवन में हमेशा एक-सी स्थिति नहीं रहती।

ग्रीष्म की प्रखर धूप के बाद वर्षा की शीतल फुहार आती है। वर्षा के बादलों से घिरे आकाश का स्थान शरद का स्वच्छ नील गगन लेता है। बचपन का अल्हड़पन किशोरावस्था की आत्मलीनता में बदल जाता है। प्रौढ़ावस्था, वृद्धावस्था में बदलती है और अंत में एक दिन चुपके से आकर मृत्यु इस जीवनरुपी नाटक पर परदा गिरा देती है। इस प्रकार सृष्टि में परिवर्तन का अखंड क्रम चलता रहता है और इसे देखकर हमें उत्साहपूर्वक काम करते रहना चाहिए। उसके प्रभाव से राजा को रंक और रंक को राजा बनने में देर नहीं लगती। यदि परिवर्तन की धारा रुक जाए और सभी दिन एक जैसे बने रहें, तो चारों ओर पुरानेपन का ही साम्राज्य दिखाई देने लगे और नई पीढ़ी को विकास का अवसर ही न मिले।

हमें सुख-दुख को समान समझते हुए अपनी मंजिल की ओर बढ़ते रहना चाहिए। मनुष्य के चेहरे पर कभी हँसी खेलती है, तो कभी आँसुओं की धारा बहती है। उचित यही है कि परिवर्तन की इस अखंडित धारा को स्वीकार करते हुए हम अपने कर्तव्य-पथ पर हमेशा आगे बढ़ते रहें, क्योंकि - 'सब दिन होत न एक समान'।

इंकार

श्री तपन कुमार पांडेय
उच्च श्रेणी लिपिक. अं.वि.

एक नदी के किनारे दो पेड़ थे, उस रास्ते से एक छोटी सी चिड़िया गुज़री और पहले पेड़ से पूछा "बारिश होने वाली है, क्या मैं और मेरे बच्चे तुम्हारे टहनी में घोंसला बनाकर रह सकते हैं?" लेकिन उस पेड़ ने मना कर दिया, चिड़िया फिर दूसरे पेड़ के पास गई ओर वही सवाल पूछा। दूसरा पेड़ मान गया। चिड़िया अपने बच्चों के साथ खुशी-खुशी दूसरे पेड़ में घोसला बनाकर रहने लगी।

एक दिन इतनी अधिक बारिश हुई कि बारिश की वजह से पहला पेड़ जड़ से उखड़ कर पानी में बह गया। जब चिड़िया ने उस पेड़ को बहते हुए देखा तो कहा, "जब तुमसे मैं और मेरे बच्चे, शरण मांगने के लिए आये थे तब तुमने मना कर दिया था, अब देखो तुम्हारे उसी रुखे बर्ताव की सजा तुम्हें मिल रही है।"

जिसका उत्तर पेड़ ने मुस्कुराते हुए दिया, "मैं जानता था मेरी जड़ें कमजोर है, और इस बारिश में मैं टिक नहीं पाऊंगा, मैं तुम्हारी और बच्चों की जान खतरे में नहीं डालना चाहता था, मना करने के लिए मुझे क्षमा कर दो" और ये कहते-कहते पेड़ बह गया।

किसी के इंकार को हमेशा उनकी कठोरता न समझे। क्या पता उसके उसी इंकार से आप का भला हो। कौन किस परिस्थिति में है शायद हम नहीं समझ सकते।

पासवर्ड सिर्फ पासवर्ड नहीं

जीवन कुमार सिन्हा
हिंदी टंकक, इसरो मु.

पासवर्ड सिर्फ पासवर्ड नहीं! आप कितने सजग हैं, उसकी पहचान है। एक समय था, जब हम अपने कीमती समानों को लॉकर या संदूक में रखते थे। हम लॉकर/संदूक को पूरी तरह से सुरक्षित समझते थे। हाँ, अभी भी आभूषण एवं जायदाद के कागज़ात को लॉकर में रखना एक बहुत ही सावधानी भरा कदम माना जाता है।

अब हम डिजिटल दुनिया में जी रहे हैं और ऐसे में महत्वपूर्ण दस्तावेज़ जैसे- ड्राइविंग लाइसेंस, जीवन बीमा, आधार का विवरण, फोटो इत्यादि सभी ई-फॉर्मेट में उपलब्ध हैं और अब तो हम उसे रोज़मर्रा के जीवन में उपयोग भी करते हैं। बैंक से संबंधित कार्य करने के लिए हम इंटरनेट बैंकिंग का उपयोग करते हैं। ई-मेल पर न जाने कितने गोपनीय तथ्य साझा करते हैं। यह सभी कार्य हम जितनी आसानी से कर लेते हैं, इन्हें सुरक्षित रखने का हमारा दायित्व भी उतना ही बढ़ जाता है। ऐसे में इन्हें सुरक्षित रखने के लिए एकमात्र हथियार है – **हमारा पासवर्ड !**

➢ **हम निम्नलिखित गलतियाँ करते हैं:-**

- अपने नाम के साथ जन्म तिथि लगाना
- अपनी गर्लफ्रेंड/पत्नि का नाम डालना
- बहुत सजगता दिखाई, तो नाम के साथ @ लगाकर बच्चों की जन्म तिथि डालना
- अपने मोबाइल नं. का उपयोग करना
- एक ही पासवर्ड को कई अकाउंट के लिए उपयोग करना
- पासवर्ड को ब्राउजर पर सेव करना
- पासवर्ड साझा करना

ध्यान रखें:- इन सभी पासवर्डों को हैकर्स आसानी से हैक कर सकते हैं और इनका अंदाज लगाना भी आसान होता है।

➢ **क्या करें :-**

- पासवर्ड कम से कम 12 अक्षरों या उससे अधिक का होना चाहिए।
- कम से कम एक कैपिटल लेटर, एक स्पेशल कैरेक्टर एवं संख्या का इस्तेमाल होना चाहिए।
- टू-वे प्रमाणीकरण

उदाहरण स्वरूप:-

ramansen-1900 ⟶ आपका पुराना पासवर्ड है।

ऐसे बदलें:-

Ram@n$en-1900 ⟶ यहाँ पर a और s के स्थान पर @ और $ का इस्तेमाल किया।

$en-1900Ram@n ⟶ आप नाम को आगे पीछे भी करके एक मजबूत पासवर्ड बना सकते हैं।

❖ दर्शाया गया पासवर्ड केवल एक तरीका बताने के लिए इस्तेमाल किया गया है। पासवर्ड बनाने में इन टिप्सों का उपयोग कर सकते हैं।

सजग रहें बनें होशियार
पासवर्ड को बनाएँ अपना हथियार

क्या आप टूथब्रश साझा करते हैं?

तो फिर पासवर्ड क्यों ?

***

जन्म होयसला राज्य का

विनोद कुमार के.
सहायक, अं.वि.

परिचय

कर्नाटक के इतिहास से जुड़ी हुई है, यह कहानी।
कहानी है यह, सदियों साल पुरानी।

कर्नाटक के पहाड़ी प्रदेश से प्रारंभ होता है, यह कथन।
इसी कथन से होता है ज्ञात, एक प्रबल राज्य का गठन।

गांव का वर्णन

एक समय की बात है, उसी पहाड़ी मलेनाडु की गोद में पलता था, अंगड़ी नामक गांव।
उगते हुए सूरज के किरणों से धूप थी कम, और चारों तरफ हरियाली से मिलती थी छाँव॥

प्रकृति में भरा था स्त्री रुपी सौंदर्य, एवं गांव में भरा हुआ था, वन का मनमोहक ऐश्वर्य ।

गांव वालें भी थे, बहुत ही शांत और बहुत ही सुशील, मन ही मन लहराते रहे शान्ति की वाणी।
बातों में ही सुनाते रहे, मौन की ध्वनि॥

ऐसा एक गांव जो सोचता था औरों का अनुकूल,
उसी में था एक आश्रम, और उसी आश्रम में था एक गुरुकुल।

नायक का प्रवेश

गुरुकुल में स्थित, एक विद्वान आचार्य।
आचार्य का नाम था *"सुदत्ताचार्य"*॥

वृक्षों के वातावरण में, अपने शिष्यों के समेत सुदत्ताचार्य करते हैं, धर्म का प्रवचन, प्रारंभ।

दूसरी ओर देवी वासंतिका के मंदिर में, श्रद्धा और भक्ति के संगम से *"सला"*
करता है पूजा-पाठ का आरंभ ॥

इस समय सुनाई देती है, गर्जने की ध्वनि ।
मचा देती है, उस शांत भरी वातावरण में अचानक, सनसनी ॥

दोपहर के धूप में, होता है, एक बाघ, प्रकट ।
पैदा कर देता है, जन के मन में भय और संकट ॥

अपने प्राण बचाने हेतु, लोग भाग उठते हैं, बिन देखे कोई राह ।
भय-भीत हो उठते हैं, और हो जाते हैं, नौ-दो-ग्यारह ॥

कर जाता है व्याघ्र, गुरुकुल में प्रवेश ।
पहुँचाता है गुरु एवं शिष्यों के चित में क्लेश ॥

(उसी क्षण, आज्ञा का प्रारंभ होता है, जब सुदत्ताचार्य ऊंचे स्वर में बुलाते हैं अपने शिष्य सला को ।)

वह शूर-वीर युवक, कवच रूपी शौर्य धारित, टूट पड़ता है उस व्याघ्र पे ।
न कोई तीर, न कोई कमान, लड़ता रहा केवल धैर्य रुपी अस्त्र से

(छुरी को सला की ओर फेंकते हुए, सुदत्ताचार्य, चिल्ला उठते हैं, *"होय-सला"*।)

सला करता है, व्याघ्र पे भयंकर प्रहार ।
हो जाता है, अंत में, वह भयंकर शिकारी, सला के हाथों से शिकार ॥

व्याघ्र को मार, सला ने बचाए जनता के प्राण ।
अब बन बैठा सला, अंगड़ी ग्राम का अभिमान ॥

कल तक जो था, एक सीधा-सादा सहायक,
बना दिया लोगों ने, उसे गांव का नायक ।

राज्य की स्थापना

सुदात्ताचार्य के आशीर्वाद से, सला करता है, राज्य की स्थापना।
व्याघ्र वध को ही बनाया राज्य-चिह्न, हुआ इस प्रकार, होयसला राज्य उत्पन्न ॥

देते हुए शिल्प-कला को प्रोत्साहन, संगीत-साहित्य का आश्वासन,
किया होयसला राज्य ने सुचारू रूप से 256 वर्षों तक राज।

इसी से होता सिद्ध यह, *होयसला राज्य का जन्म*,
कर्नाटक इतिहास का है एक अनमोल ताज ॥

कवि का संदेश

कर्नाटक प्रदेश में होयसला राज्य का महत्वपूर्ण प्रभाव पड़ा है। सन 1187 से 1343 तक, 256 वर्षों तक होयसला वंश ने कर्नाटक पर राज किया था। उन्हीं के प्रशासन में सैकड़ों शिल्प एवं मंदिरों की रचना की गई थी, जो आज भी मानव के नेत्रों को विस्मित एवं आश्चर्यचकित कर देती है।

शब्दार्थ

व्याघ्र - बाघ

होय - प्राचीन कन्नड़ भाषा में 'होय' की परिभाषा है "मारना" या "मार डालना"। इस सन्दर्भ में सला बाघ को मार डालता है। अत: इसी नाम से राज्य का स्थापना की गई।

प्राकृतिक कला का अनुपम उदाहरण – मधुबनी पेंटिंग

श्री निशांत कुमार शर्मा
हिंदी टंकक, अं.वि.

किसी भी देश के लिए उसकी संस्कृति एवं उस संस्कृति में व्याप्त विभिन्न प्रकार की कलाएं

महत्वपूर्ण स्थान रखती है। ये कलाएं चित्र, संगीत, नृत्य, वाद्य, मूर्ति इत्यादि के रूप में हो सकती हैं। मानव जीवन में भी इन कलाओं का अहम स्थान रहा है। कला के माध्यम से मानव तात्कालिक परिवेश, समृद्ध विरासत, प्राकृतिक सौंदर्य आदि को दर्शाता है। अत: अपने मनोगत कल्पनाओं व भावों को सौंदर्य के साथ मूर्त रूप में व्यक्त करना ही कला है।

हमारे देश में भी प्राचीन काल से ही कला का एक विशेष स्थान रहा है। प्राचीन भारत के एक महान संत भर्तृहरि ने कला के महत्व को इस श्लोक के माध्यम से बतलाया है – "साहित्य, संगीत, कला विहीन: साक्षात्पशु पुच्छविषाणहीन: ।" अर्थात् उन्होंनें कहा है कि साहित्य, संगीत तथा कला से हीन मनुष्य पूंछ व सींग से रहित साक्षात पशु के समान है। कहने का तात्पर्य यह है कला हमारे जीवन का एक अहम हिस्सा है जिसके बिना मानव संस्कृति नीरस एवं रंगहीन दृष्टिगत होगी। भारत अपनी संस्कृति एवं कला के क्षेत्र में शुरू से ही समृद्ध रहा है और इन्हीं कलाओं के कारण भारत को इस क्षेत्र में अंतरराष्ट्रीय पहचान भी मिलती रही है, साथ ही दुनिया भर के पर्यटक हमारी समृद्ध कलाओं के प्रति आकर्षित भी होते रहे हैं। इन्हीं कलाओं के बीच एक कला ऐसी भी है जिसे यदि भारत की अद्वितीय एवं पर्यावरण के निकटता का एक बेजोड़ उदाहरण कहा जाए तो यह गलत न होगा। इस कला का नाम है – 'मधुबनी पेंटिंग'।

आइए, सर्वप्रथम हम मधुबनी पेंटिंग, जिसे मिथिला पेंटिंग के नाम से भी जाना जाता है, के इतिहास के बारे में जानते हैं। कहा जाता है कि त्रेतायुग में जब जनकपुर की राजकुमारी सीता का विवाह अयोध्या के राजकुमार राम के साथ तय हुआ, तब इस विवाहोत्सव के उपलक्ष्य में जनकपुर के राजा जनक के आदेशानुसार पूरे राज्य को एक विशेष कलाकृति से सजाया गया था, जिसने समस्त राज्य को एक अलग ही रूप-रंग दे दिया और इसे देखकर सारे अतिथि, देश-विदेश से पधारे राजा-महाराजा मंत्र-मुग्ध हो गए थे। उस समय इस विशेष प्रकार की कलाकारी की चर्चा मिथिला क्षेत्र के अलावा आस-पास के राज्यों में होने लगी। कालांतर में यही कलाकारी मधुबनी पेंटिंग या मिथिला पेंटिंग के नाम से प्रसिद्ध हुई और इस तरह इस पेंटिंग की शुरुआत त्रेतायुग से मानी जाती है।

मधुबनी पेंटिंग की प्रमुख विशेषता इसके गहरे चटकीले रंगों से भरे गए रेखा-चित्र और

आकृतियां हैं। ये चित्रकारी अपने मूल प्राकृतिक रूप के कारण भी लोकप्रिय है। वर्तमान समय में जब हर क्षेत्र में कृत्रिम व बनावटी सामानों का बोलबाला है, जो पर्यावरण के प्रतिकूल एवं मानव स्वास्थ्य के प्रति भी हानिकारक ही रहे हैं, ऐसे दौर में 'मधुबनी पेंटिंग' को प्रकृति के अनुकूल कहा जाए तो यह अतिशयोक्ति नहीं होगी। इस पेंटिंग की एक प्रमुख विशेषता यह है कि इसमें प्रयोग किए जाने वाले रंगों से लेकर ब्रश तक प्रकृति से सीधे प्राप्त पदार्थ ही होते हैं, जिनकों घरों में आसानी से तैयार किया जा सकता है।

मधुबनी पेंटिंग में जिन रंगों का प्रयोग होता है, उन्हें घरेलू चीजों से ही तैयार किया जाता है। जैसे – पीले रंग के लिए हल्दी, हरे रंग के लिए केले के पत्ते, सफेद रंग के लिए चूने या चावल का चूर्ण, लाल रंग के लिए पीपल की छाल या कुसुम के फूल, नारंगी रंग के लिए पलाश के फूल इत्यादि का प्रयोग किया जाता है। इसमें ब्रश के रूप में माचिस की तिलियों तथा बांस का प्रयोग किया जाता है। साथ ही, रंगों की पकड़ दीवार पर लंबे समय तक बनी रहे, इसके लिए रंगों में बबूल के पेड़ से प्राप्त गोंद मिलाया जाता है। पेंटिंग बनाने के लिए रंगों का प्रयोग सपाट रूप से किया जाता है, जिन्हें न तो रंगत (शेड) दी जाती है और न कोई स्थान खाली छोड़ा जाता है। इन पेंटिंग में चित्रों के रूप में हिंदू देवी-देवताओं और पौराणिक गाथाओं का भरपूर चित्रण किया जाता है। साथ ही, ऐसे ही चित्र लिए जाते हैं जो इनकी शैली से मेल खाते हों। इसके अलावा लोक-महोत्सव, राजदरबारों के दृश्य, सामाजिक समारोह इत्यादि का प्रयोग भी इनके चित्रों के लिए किया जाता है। इसमें खाली स्थानों को भरने के लिए फूल-पत्तियों, पशु-पक्षिओं के चित्रों, ज्यामितिय डिजाइनों का प्रयोग किया जाता है।

यदि आधुनिक इतिहास में मधुबनी पेंटिंग की पहचान की बात की जाए तो वर्ष 1934 ई. के पहले तक इसे केवल एक ग्रामीण लोककला के रूप में जाना जाता था। लेकिन 1934 ई. में बिहार में आए भंयकर भूकंप के बाद यह लोककला की सीमा से निकलकर अंतरराष्ट्रीय स्तर पर पहचानी गई। कहा जाता है कि उस समय तत्कालीन ब्रिटिश अधिकारी विलियम आर्चर जब भूकंप से हुए नुकसान को देखने आए, तो उनकी नज़र उन टूटे हुए घरों की टूटी दीवारों पर बनाई गई पेंटिंग पर गई, उन्हें देखकर वे अत्यन्त आश्चर्यचकित हुए और उनकी तुलना पिकासो जैसे मॉडर्न आर्टिस्ट की पेंटिंग से की। फिर उन्होंने इन पेंटिंग्स की ब्लैक एण्ड व्हाइट फोटो ली, जिसे मधुबनी पेंटिंग की अब तक की सबसे पुरानी तस्वीर माना जाता है। बाद में उन्होंने 1949 ई. में 'मार्ग' नामक एक आर्टिकल लिखा, जिसमें मधुबनी पेंटिंग की विशेषताओं के बारे विस्तार से वर्णन किया। इसके बाद पूरी दुनिया को मधुबनी पेंटिंग की विशेषताओं तथा सुंदरता के बारे में पता चला। कालांतर में मधुबनी पेंटिंग को पहचान दिलाने में अनेक महिला विभूतियों ने भी अपना विशेष योगदान दिया है, उन्हीं के प्रयासों से आज मधुबनी पेंटिंग को भारत ही नहीं बल्कि विश्व के अनेक देशों में पहचान मिली है।

यद्यपि मधुबनी पेंटिंग जैसी अनोखी एवं पर्यावरण हितकारी कला को अंतरराष्ट्रीय स्तर पर जो पहचान मिलनी चाहिए थी, वह अब तक नहीं मिली, चाहे इसका कारण विभिन्न सरकारों का इसके प्रति उदासिन रवैया हो या अपने ही लोगों द्वारा इसके प्रति उपेक्षा का भाव। खैर कहा जाता है, जब जागो तभी सवेरा, देर से ही सही परंतु अब राज्य व केंद्र सरकार का ध्यान इस लुप्त होती कला की ओर अवश्य गया है। इस दिशा में अब अनेक कदम उठाए जा रहें हैं। बिहार सरकार ने भी इस कला को सहेजने के उद्देश्य से एक ऐसे संस्थान को खोलने की घोषणा की है, जिसमें इस पेंटिंग से संबंधित प्रशिक्षण तथा शोधकार्य किए जाएंगे, जिसे बाद में विश्वविद्यालय का

रूप दे दिया जाएगा। यह पेंटिंग अपनी कई खुबियों के कारण देश ही नहीं विदेशों में भी पसंद की जा रही है। जापान ने भी इस पेंटिंग के महत्व को समझते हुए अपने यहां एक संग्रहालय का निर्माण किया है। साथ ही, इस कला के कलाकारों को पद्मश्री एवं पद्मभूषण जैसे प्रतिष्ठित पुरस्कार देना वर्तमान सरकार का मधुबनी पेंटिंग के प्रचार-प्रसार के लिए एक सक्रिय कदम एवं सकारात्मक सोच को दर्शाता है। इसके अलावा बिहार के विभिन्न क्षेत्रों में चलनेवाली रेलगाड़ियों, बिहार स्थित रेलवे स्टेशनों, विभिन्न सरकारी इमारतों आदि पर इस पेंटिंग का बनाया जाना, देश-विदेश में प्रदर्शनी का आयोजन तथा देशी-विदेशी अतिथियों को भेंट स्वरूप मधुबनी पेंटिंग का दिया जाना इस पेंटिंग की पहचान व उसके प्रचार-प्रसार में अहम भूमिका निभा रहे हैं। इस प्रकार मधुबनी पेंटिंग की वर्तमान स्थिति पहले की तुलना में बेहतर हुई है, और अब इसे व्यापक स्तर पर पहचाना भी जाने लगा है, परंतु इसकी पहचान को दीर्घकालिक बनाने के लिए यह आवश्यक है कि सरकार एवं आम जन-मानस द्वारा इसके लिए कुछ पहल की जानी चाहिए, जैसे- इनके कलाकारों को समय-समय पर आर्थिक एवं सामाजिक प्रोत्साहन, प्रतिस्पर्धा के इस युग में कलाकारों को वर्तमान चुनौतियों के अनुसार प्रशिक्षण, पेंटिंग से संबंधित उत्पादों के लिए बाजार, आम लोगों में इसके प्रति रुचि बढ़ाने हेतु विभिन्न संचार माध्यमों से प्रचार-प्रसार इत्यादि।

इस प्रकार सामूहिक प्रयास से मधुबनी पेंटिंग के रूप में एक अनोखी, प्रकृति अनुकूल तथा अत्यंत मनमोहक कला को अंतरराष्ट्रीय स्तर पर एक अलग पहचान दिलाकर कला के क्षेत्र में भारत को एक ओर उपलब्धि प्राप्त हो सकती है।

चित्रदुर्ग की यात्रा

नंजेगौड़ा
ल.वा.चा. - ए, इसरो मु.

हमारी यात्रा दिनांक 8 फरवरी 2020 की सुबह 6 बजे बेंगलूरु से कार से आरंभ हुई। 9 बजे के करीब हम हमारे प्रवास की पहली जगह चित्रदुर्ग पहुंचे। घर से ही लाई रोटी और सब्जी खाकर चित्रदुर्ग किले के दरवाजे के पास आकर काउंटर में टिकट लेकर किला चढ़ना शुरू किया। चित्रदुर्ग भारत के प्रमुख किलों में से एक है। 11 वीं से 13वीं शताब्दी के बीच चालुक्य और होय्सला ने इस किले की स्थापना की थी। बाद में बहुत से राजाओं ने इस किले को बढ़ाया। पूरे किले को देखने के लिए एक पूरा दिन लग जाता है। इसलिए हम कुछ मुख्य स्थानों को देखकर वापस लौट आए। चित्रदुर्ग के आस-पास बड़े-बड़े पहाड़ हैं। उन पहाड़ों पर पवन चक्की मौजूद हैं, जिनसे विद्युत उत्पन्न होती है।

जैसे ही आप चित्रदुर्ग नगर पहुँचेंगें, आपको दोनों ओर पवन चक्की देखने को मिलेंगीं। बाद में हम श्री मृघा राजेंद्र मठ में पहुंचे। यह मठ कर्नाटक के प्रमुख मठों में से एक है। इसकी स्थापना 17वीं शताब्दी में हुई। मठ के साथ यहां का प्रमुख आकर्षण केंद्र शिल्प उद्यान है। वहां पर खाना खाकर तथा मठ और उद्यान में बच्चों के साथ घूमकर शाम 5 बजे चित्रदुर्ग की मीठी यादों के साथ हम हरिहर के लिए रवाना हो गए। हरिहर दावणगेरे जिला की एक तालुका है। यह तालुका तुंगभद्रा नदी के किनारे बसी हुई है। यहां ऐतिहासिक रूप से प्रसिद्ध श्री हरिहरेश्वर मंदिर को 1223ई.-1224ई. होय्सला के राजा वीर नर सिंह II ने बनाया था। इस मंदिर की विशेषता यह है कि हरी और हर दोनों को एक मूर्ति में बनाया गया है।

यहां के मंदिर को देखने के बाद हम 60 कि.मी. दूर स्थित हावेरी पहुंचे। वहां हम लोगों ने उत्तर कर्नाटक की प्रसिद्ध मकई की रोटी, दाल और चावल का भोजन किया। वहीं पर हम लोगों ने रात बिताई। सुबह 6 बजे के करीब शिशुविनाल गांव की ओर चल दिए। शिशुविनाल गांव हावेरी से करीब 50 कि.मी. की दूरी पर स्थित है। यह संत शिशुनाल शरीफ साहिब की समाधि है। इनका जन्म 1819 ई. में हुआ। उन्होंने कन्नड़ में बहुत से सैद्धांतिक पदों की रचना की है। इस गांव की विशेषता यह है कि हिंदु-मुस्लिम सभी लोग इनका सम्मान करते हैं इसलिए यह सर्वधर्म समभाव का क्षेत्र माना

जाता है। उनका निधन 1889 ई. में इसी गांव में हुआ था। शरीफ साहिब की समाधि और मंदिर देखने के बाद प्रसाद खाकर और वहीं के दुकानों से बच्चों के लिए खिलौने और नमकीन लेकर, करीब 12 बजे अविस्मरणीय यादों के साथ हम बेंगलूरु वापस चल दिए।

चित्रदुर्ग की विरांगना

- **ओंके ओबव्वा**: एक कन्नड़ महिला (18 वीं शताब्दी) जिसने हैदर अली की सेना से, अकेले मूसल (ओंके) के साथ भारत के कर्नाटक राज्य के चित्रदुर्ग में लड़ाई लड़ी थी। उनका पति चित्रदुर्ग के चट्टानी किले में एक प्रहरी था। कर्नाटक राज्य में, अब्बक्का रानी, केलदी चेन्नम्मा और कित्तूर चेन्नम्मा के साथ-साथ ओबव्वा भी महिला योद्धाओं और देशभक्तों के रूप में जानी जाती है। उन्हें कन्नड़ महिला गौरव का प्रतीक माना जाता है। वह छेद, जिसके माध्यम से हैदर अली के सैनिक अन्दर आने का प्रयास किया था, उसे ओंके ओबव्वा किंडी (किंडी - छेद) या ओंके किंडी कहा जाता है। पुत्तन्ना कनागल द्वारा निर्देशित नागरहुव चित्र के एक प्रसिद्ध गीत-अनुक्रम में उनके प्रसिद्ध प्रयास को दर्शाया गया है। चित्रदुर्ग में खेल स्टेडियम का नाम उनके नाम पर - "वीर वनीथे ओंके स्टेडियम", रखा गया है, और चित्रदुर्ग में जिला आयुक्त कार्यालय के सामने अशोक गुडीगर द्वारा निर्मित उनकी प्रतिमा को स्थापित किया गया है।

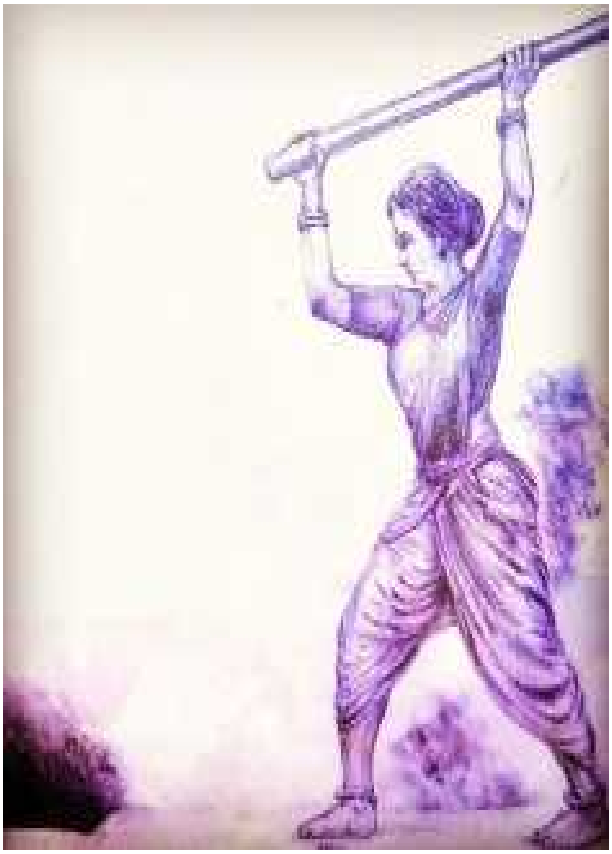

प्यालियों में शब्द के, विराट आ सकता नहीं

श्री गुरू प्रसाद यादव
क. हिंदी अनुवादक
इसरो मु.

जिसने बनाई है धरा, आकाश और पाताल भी
है वही जीवन सृजन में, और है वह काल भी।

मूर्त में, अमूर्त में और शून्य में भी है वही
है वो दिन की रोशनी तो रात काली भी वही।

वह ज्ञात है यह मानना मेरी समझ से भूल है
आदमी इस सृष्टि में मुट्ठी बराबर धूल है।

वह क्षितिज है एक ऐसा जो पहुँच से दूर है
पर आदमी अपनी महत्वाकांक्षा में चूर है।

आदमी को आदमी से, है परे दिखता नहीं
आदमी फिर भी है कहता, आदमी ही है सही।

मैं नहीं कुछ जानता, ये नहीं अभिमान है
जीवन मेरा मेरे लिए एक यत्न है, अभियान है।

अनाम को अपने लिए मैं नाम दे सकता नहीं
प्यालियों में शब्द के, विराट आ सकता नहीं।

***

छोटे आदमी से बड़ा आदमी

गोविंदराजु वी.
एस.सी.डी.-ए, इसरो मु.

छोटे आदमी कुछ नहीं कर सकते हैं
लेकिन वह बड़े तो बन सकते हैं।

छोटे आदमी एकदम बड़े नहीं बन सकते
लेकिन एक-एक मंजिल हासिल करके बन सकते हैं
जैसे हमारे डॉ. कै. शिवन सर बने हैं।

विक्रम साराभाई की मूर्ति को अंदर लाये
भारतवासी भी अंतरिक्ष में जाए,
उस तकनीक की जरूरत को पूरा करने के लिए
समानव अंतरिक्ष उड़ान केंद्र की शुरुआत करवाई।

तुमकूर में आई.टी.पी.एफ. की स्थापना
नेत्रा केंद्र को भी बनाकर दिखा दिया।

और भी ऐसे अनेक काम कर दिखाए
छोटे आदमी कुछ नहीं कर सकते हैं
लेकिन वह बड़े तो बन सकते हैं
जैसे हमारे डॉ. कै. शिवन सर बने हैं।

***

जिंदगी

श्रीमती पद्मा एन.
व. परियोजना सहायक, इसरो मु.

एक दिन ऐसा था,
कुछ न था हमारे पास ।

आधे भूखे आधे प्यासे
जीना बस था दुश्वार ।

अमीर गरीब की दूरी देखी है हमने
इसलिए हम निकल गए वहाँ से ।

बस एक ही था हमारे पास
जिद्द और ईमानदारी ।

इसीलिए हमने न कभी की
किसी से लाचारी ।

खुश रखे भगवान हमें इसी में,
दे दो नम्रता हमारी जिन्दगी में ।

***

जिंदगी के प्रति आभार

गुरू प्रसाद यादव
क. हिंदी अनुवादक
इसरो मु.

तू रोज नई परिभाषा गढ़ती
किस्सा अलग-अलग है कहती
वो जो मैंने कल सीखा था
उसे आज तू झुठला देती ।।

कभी सुबह की किरणों जैसी
फूलों की सुगंध हो, वैसी
हल्की कभी समीर की तरह
सावन की फुहार के जैसी ।।

पढ़ने की तुझे कोशिश करता
जद्दोज़हद तमाम मैं करता
पर तू समझ कहाँ आती है
दिन-दिन लिखता, शाम मिटाता ।।

तुझसे छिपा नहीं कुछ भी है
तू सर्वव्याप्त, अंतरयामी है
मेरे हर सवाल के उत्तर
तुझसे बेहतर कहीं नहीं है ।।

जब भी गिरा मैं ठोकर खाकर
दिया सहारा तूने आकर
मेरे हर निर्णय से पहले
सही-गलत आभास करा कर ।।

मुझको तुम आजादी देती
और विवश भी तनिक ना करती
राहें मैं जैसी भी चुनता
संग मेरे तू चलने लगती ।।

है गुरू नहीं तुझसे बेहतर
सिखलाए बिना धैर्य खोकर
मूढ़ता मेरी, ग़र ना समझा
तूने छोड़ी ना कोई कसर ।।

मुझको हर क्षण आभास रहा
मैं हर पल तेरे पास रहा
तू पकड़ मेरी उँगली हरदम
चलते रहने को मुझे कहा ।।

आभारी हूँ जिंदगी तेरा
मुझमें जो कुछ थोड़ा मेरा
वह पाया है सब कुछ तुझसे
कुछ भी तो नहीं यहां मेरा ।।

जिंदगी रूप तेरे अनेक
हैं सभी एक से बढ़ के एक
जितना मैं देखता जाता हूँ
लगते विराट हैं वे प्रत्येक ।।

***

भ्रष्टाचार मुक्त भारत

रश्मि ठाकुर
व. हिंदी अनुवादक
इसरो मु.

बने भारत एक समृद्ध देश
उभरे बनकर आत्मनिर्भर देश
है यह सपना हर भारतीय का
रहे ऊँचा सदा तिरंगा देश का
विश्व पटल पर हो धाक हमारी
सबसे सुदृढ़ हो साख हमारी।

राजनीति, उद्योग, मनोरंजन या हो अर्थव्यवस्था
हर ओर है नियमों की कुव्यवस्था।
नहीं पूरा होता है कोई काम समय से
बढ़ती नहीं है कोई फाइल एकदम से
पैसे और पहचान की जुगाड़ लगानी पड़ती है
ईमानदारों को भी इसकी मार सहनी पड़ती है।

प्रकृति से मिला अनंत भंडार
हर संसाधन है यहाँ अपार
मानवशक्ति की भी कोई न कोताही
देशप्रेम की भावना भी है ही
धर्म, आध्यात्म, ज्ञान-विज्ञान, तकनीक
हर विधा की है यहाँ सीख।

भ्रष्टाचार को न केवल कर्म से हटाओ
मन, विचार और वाणी से भी भगाओ।
अपनी कथनी और करनी को सम बनाओ
कर लो प्रण इससे खुद को बचाओ
घूस लेना-देना ही मात्र नहीं है भ्रष्टाचार
दूसरों का शोषण करना भी है भ्रष्ट आचार

फिर भी क्यों है देश पिछड़ा ?
क्योंकि मनुष्य सिद्धांतों से बिछड़ा।
नीति, आचरण,मूल्य हुए गौण
पैसे के आगे है किसका कौन?
सब लोग हैं भौतिकता की दौड़ में
ज़रूरत से ज्यादा जुटाने की होड़ में।

देश की प्रगति में हैं कई अवरोध
बेईमानी, घूसखोरी, भ्रष्टाचार का है प्रकोप
सत्ता और शक्ति का हो रहा दुरुपयोग
जिससे नहीं बन पा रहा प्रगति का सुयोग
भ्रष्टाचारी कर रहें हैं सब कुछ तार-तार
इससे मच रहा है देश में भीषण हाहाकार।

अब समय आ गया है बदलाव का,
समय रहते ही स्वयं को सँभालने का
आत्म संतुष्टि और संयम को मज़बूत करें
स्वयं और देश के सम्मान की रक्षा करें।
आओ! सब मिल-जुल कर अब यह तय करें
भ्रष्टाचार रूपी कैद से स्वयं को मुक्त करें।।

जय हिंद!!

***

पेन की पैनी जुबां

जीवन कुमार सिन्हा
हिंदी टंकक
इसरो मु.

कट गई या काट दी गई ।
जुबां हमारी ।

तेज धार थी शान हमारी ।
अब रोज फिसलती है, जुबान हमारी ।

शिक्षार्थी का मैं सेवक हूँ ।
लेखक का मैं खेवक हूँ ।

कितने युद्ध लड़े हमने ।
कितने दोष जड़े हमने ।

हर बार पटखनी देता था ।
हर बार विजयी होता था ।

घमण्ड, न चढ़ने दिया मैं ।
न थका न हारा मैं ।

फिर आज ये कैसी लीला है ।
ये किस पाप का सिला है ।

आज मेरी, मुझसे ही जंग है ।
कैसी दुविधा न उमंग न तरंग है ।

वैसे तो तत्पर रहता था ।
जीत अधिकार में लेता था ।

हार को न देखा न जाना हमने ।
रुकना, ठहरना न माना हमने ।

एक सोची समझी सोच ने लड़ा दिया ।
आज हमें अपनों ने हरा दिया ।

हमारी उपज ही हम पर हावी है ।
इसलिए आज माउस ज्यादा प्रभावी है ।

***

एवोकाडो (बटरफ्रुट) शेक

महेश मार्तण्ड
रसोइया
इसरो मु.

एवोकाडो एक बड़ा, गूदे वाला नाशपाती के आकार की बेरी है। इसका स्वाद सौम्य और लगभग मक्खन जैसा होता है। यह मोनो अनसैचुरेटेड फैटी एसिड (एम.यू.एफ.ए.) से भरपूर होता है जो कोलेस्ट्रॉल के स्तर को प्रतिबंधित करने में मदद करता है। यह शरीर में सूज़न/जलन को कम करने और ऑर्टरी ब्लॉकेज को रोकने में मदद करता है, जो दिल के दौरे के मुख्य कारणों में से एक है। यह रक्तचाप संतुलित रखता है एवं हृदय रोग को रोकने और स्ट्रोक को टालने में भी मदद करता है।

आइए इन सब खूबियों के साथ आपको एवोकाडो शेक बनाने की विधि बताते है। इसे बनाने के लिए ज्यादा सामग्री की जरूरत भी नहीं पड़ती है, लेकिन मात्रा बिल्कुल सही होनी चाहिए।

सामग्री

वस्तु का नाम	मात्रा
एवोकाडो	1 (एक)
केला	½ (आधा)
शहद	3 चम्मच
दूध	1 कप
आइसक्रीम (वैकल्पिक)	1 कप

बनाने की विधि

1. सबसे पहले एक ब्लेंडर में पील किया हुआ एवोकाडो लें।
2. इसमें केला मिलाएं ।
3. 3 (तीन) बड़े चम्मच शहद डालें। मिठास के लिए चीनी या गुड़ का उपयोग कर सकते हैं।
4. अब एक कप ठंडा दूध डालें और अच्छी तरह स्मूदी में मिलाएं ।
5. परोसने के लिए लंबा काँच का गिलास लें और काँच की दीवार पर केले के कुछ स्लाइस रख दें।
6. इसमें तैयार एवोकाडो स्मूदी डालें।
7. इसके बाद एक स्कूप वनीला आइसक्रीम डाल कर कटे हुए काजू, बादाम का गार्निश कर दें।

इस तरह एवोकाडो ठंडे स्मूदी का आनंद लें।

विभिन्न महत्वपूर्ण समितियाँ

- केंद्रीय हिंदी समिति
  - अध्यक्ष – प्रधानमंत्री
    - बैठक की आवधिकता – समय समय पर
- हिंदी सलाहकार समिति
  - अध्यक्ष - संबंधित मंत्री
    - बैठक की आवधिकता- छह महिने में एक बार
- संसदीय राजभाषा समिति
  - अध्यक्ष - भारत के गृहमंत्री
    - बैठक की आवधिकता – समिति के दौरा कार्यक्रम के अनुसार
  - उपाध्यक्ष
    - पहली उप-समिति
    - दूसरी उप-समिति
    - तीसरी उप-समिति
- केंद्रीय राजभाषा कार्यान्वयन समिति
  - अध्यक्ष - सचिव रा.भा. विभाग गृह मंत्रालय
    - बैठक की आवधिकता – वर्ष में एक बार
- नगर राजभाषा समिति (केंद्रीय कार्यालयों / बैंकों / उपक्रमों) के लिए अलग-अलग
  - अध्यक्ष - नगर के सदस्य कार्यालयों में से वरिष्ठतम अधिकारी
    - बैठक की आवधिकता – हर छमाही में एक बार
- राजभाषा कार्यान्वयन समिति
  - अध्यक्ष - हर मंत्रालय/ विभाग/कार्यालय में रा.भा. कार्यान्वयन के प्रभारी संयुक्त सचिव/अपर सचिव/विभागाध्यक्ष
    - बैठक की आवधिकता – हर तिमाही में एक बार

महत्वपूर्ण राजभाषा नियम

नियम - 5
हिन्दी में प्राप्त पत्रों का उत्तर हिन्दी में दिया जाए।

नियम - 7
हिन्दी में हस्ताक्षरित या तैयार किसी भी आवेदन, अपील या अभ्यावेदन का उत्तर हिन्दी में ही दें।

नियम 10 (4)
कार्यालय के 80% कर्मचारियों द्वारा हिन्दी कार्यसाधक ज्ञान प्राप्त करने पर कार्यलय को राजपत्र में अधिसूचित किया जाए। यदि किसी अधिसूचित कार्यलय में हिन्दी का कार्यसाधक ज्ञान रखनेवाले कर्मचारियों का प्रतिशत 80% से कम हो जाता है तो राजपत्र में अधिसूचना द्वारा घोषित किया जा सकता है कि उक्त कार्यालय उस तारीख से अधिसूचित नही रह जाएगा।

नियम – 8
कर्मचारी हिन्दी या अंग्रेजी में टिप्पणी लिख सकता है

नियम – 11
द्विभाषी रूप में जारी किए जाने वाले दस्तावेज:

मैनुअल, संहिताएं, साहित्य, सूचना बोर्ड, फार्म, स्टेशनरी सामग्री, पत्र शीर्ष, रजिस्टरों के शीर्ष , नामपट्ट इत्यादि

नियम 12
कार्यान्वयन की जिम्मेदारी कार्यालय प्रधान की होगी

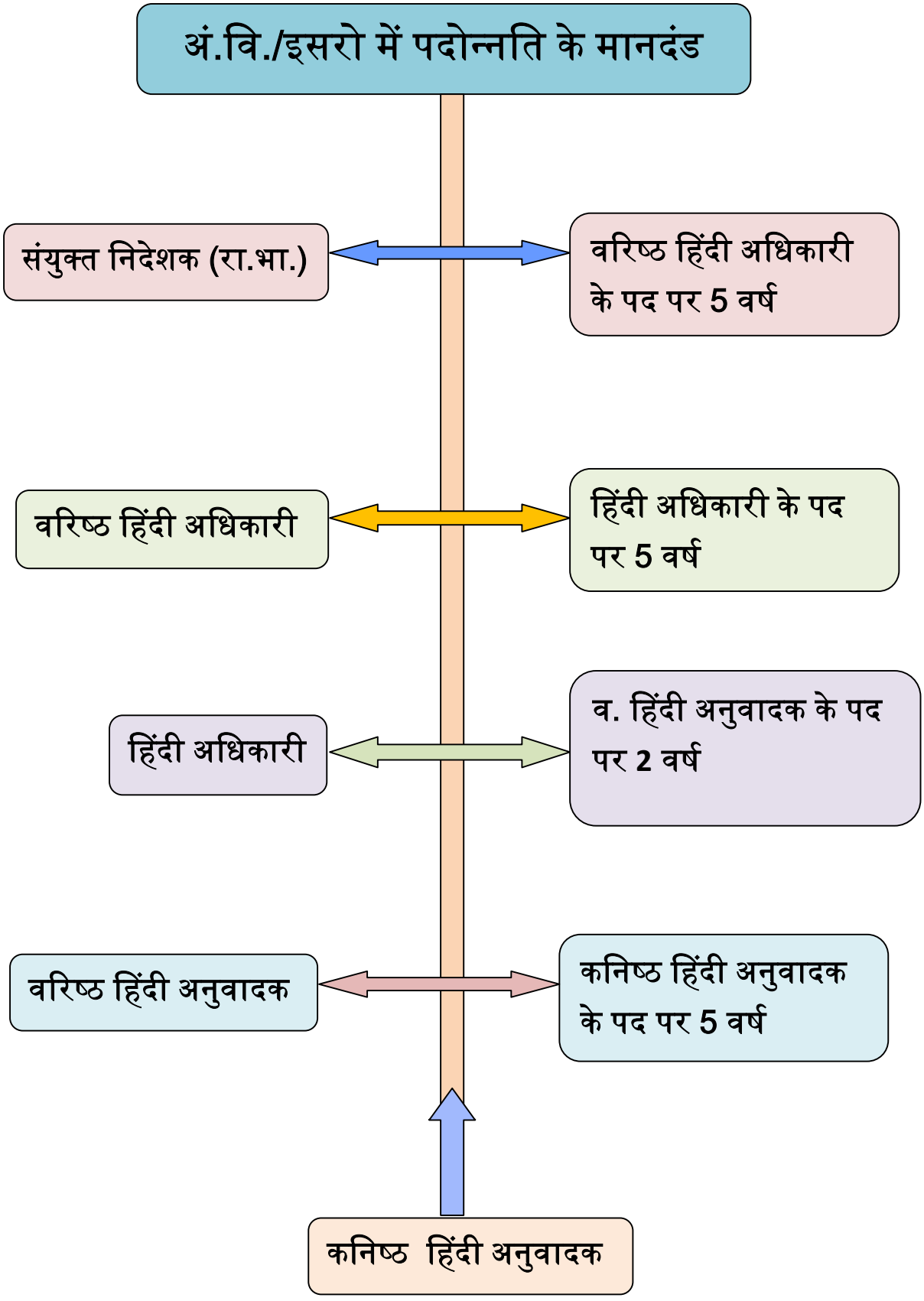

अं.वि./इसरो में पदोन्नति के मानदंड

मई 2020 से मार्च 2021 के दौरान अंतरिक्ष विभाग में आयोजित विभिन्न कार्यक्रम :-

❖ **21 मई 2020 "आतंकवाद विरोधी दिवस"** – इस दिवस को मनाने का मुख्य उद्देश्य आतंकवाद के प्रति जागरूकता को बढ़ाना तथा युवाओं को आंकवाद तथा हिंसा के पथ से दूर करना है। इस वर्ष इस अवसर पर कोविड-19 वैश्विक महामारी के कारण सभी कर्मचारियों ने अपने कार्यस्थल से ही शपथ ग्रहण की।

❖ **05 जून 2020 – विश्व पर्यावरण दिवस** – प्रति वर्ष की भांति इस वर्ष भी 05 जून को पर्यावरण दिवस मनाया गया। इस वर्ष का विषय था "जैव विविधा उत्सव"। जैव विविधा का संरक्षण स्वस्थ पर्यावरण की कुंजी है। इस मौके पर सभी कर्मचारियों को पौधे तथा खाद वितरित किए गए। इस वितरण के दौरान सामाजिक दूरी एवं कोविड से संबंधित अन्य सभी उपायों का पालन किया गया।

❖ **21 जून 2020 - अंतरराष्ट्रीय योग दिवस** – इस वर्ष का विषय था "घर पर योग एवं परिवार के साथ योग"। इस वर्ष अं.वि. में 21 जून 2020 को इस कार्यक्रम का आयोजन डिजिटल मीडिया के माध्यम से किया गया।

❖ **02 जुलाई 2020 – "विक्रम साराभाई जन्म शताब्दी समारोह"** – ऑनलाइन संगोष्ठी – इस ऑनलाइन संगोष्ठी में अनेक विशिष्ट व्यक्तियों द्वारा विक्रम साराभाई पर एवं उनसे संबंधित कार्यों एवं विषयों पर व्याख्यान दिए गए।

❖ **20 अगस्त 2020- "सद्भावना दिवस"** – हिंसा से बचना तथा लोगों के बीच सदिच्छा को बढ़ावा देना तथा सभी धर्मों, भाषाओं एवं क्षेत्रों के लोगों के बीच राष्ट्रीय एकता एवं सांप्रदायिक सद्भाव को बढ़ावा देना सद्भावना दिवस मनाने का उद्देश्य है। इस अवसर पर, अंतरिक्ष भवन के सभी कर्मचारियों ने अपने-अपने कार्यस्थल से शपथ ग्रहण की।

❖ **14 सितंबर से 30 सितंबर 2020 – "हिंदी पखवाड़ा समारोह"** – भारत सरकार की राजभाषा नीति के अनुसरण में प्रति वर्ष हिंदी पखवाड़ा का आयोजन किया जाता है। इस वर्ष 14.09.2020 से 30.09.2020 तक अंतरिक्ष भवन में अं.वि./इसरो मु. एंट्रिक्स और एनसिल के लिए संयुक्त रूप से हिंदी पखवाड़े का आयोजन किया गया। इस दौरान हिंदी भाषी तथा हिंदीतर भाषी कर्मचारियों के लिए कई प्रतियोगिताएं आयोजित की गईं। इन सभी प्रतियोगिताओं के आयोजन के दौरान कोविड-19 से संबंधित दिशा-निर्देशों का पालन किया गया। इस वर्ष विशेष रूप से "राजभाषा प्रश्नोत्तरी" प्रतियोगिता का आयोजन ऑनलाइन माध्यम से किया गया। इस वर्ष भीड़-भाड़ से बचने के लिए किसी भी प्रकार का पुरस्कार वितरण समारोह आयोजित नहीं किया जा सका। सभी विजेताओं को पुरस्कार तथा प्रमाण पत्र व्यक्तिगत रूप से प्रदान किए गए। कर्मचारियों के उन बच्चों को, जिन्हें 10वीं तथा 12वीं की अंतिम परीक्षा में हिंदी में सर्वोत्तम अंक प्राप्त हुए, उन्हें भी पुरस्कृत किया गया।

❖ **02 अक्तूबर 2020 – "महात्मा गांधी की 150वीं जयंती समारोह"** – विभाग के निर्देशों के क्रम में 2 अक्तूबर 2018 से 2 अक्तूबर 2020 तथा 2 वर्षों की अवधि में महात्मा गांधी की 150वीं जयंती मनाने के संबंध में वर्ष भर की गतिविधियों के समापन के रूप में 2 अक्तूबर 2020 को गांधी जयंती समारोह मनाया गया, इसके अंतर्गत अनेक आयोजन किए गए जैसे कि "श्रम का सम्मान" विषय पर कन्नड़, हिंदी, अँग्रेजी भाषा में निबंध प्रतियोगिता, "महात्मा गांधी के विरासत की वर्तमान समय में प्रासंगिकता" विषय पर ऑनलाइन व्याख्यान तथा महात्मा गांधी पर एक ऑनलाइन प्रश्नोत्तरी । इन सभी में कर्मचारियों द्वारा

अच्छी प्रतिभागिता रही।

❖ **27 अक्तूबर 2020 से 02 नवंबर 2020 – "सतर्कता जागरूकता सप्ताह 2020"** – सार्वजनिक जीवन में सत्यनिष्ठा, पारदर्शिता तथा जवाबदेही को बढ़ावा देने के प्रयासों के भाग के रूप में अंतरिक्ष भवन में 27.10.2020 से 02.11.2020 तक "सतर्कता जागरूकता" सप्ताह मनाया गया। इस वर्ष का विषय था "सतर्क भारत, समृद्ध भारत"। इस संबंध में अनेक कार्यक्रमों जैसे सत्यनिष्ठा शपथ ग्रहण, कन्नड़, हिंदी एवं अंग्रेजी भाषा में "नारा लेखन" प्रतियोगिता, ऑनलाइन प्रश्नोत्तरी, प्रख्यात संकाय द्वारा व्याख्यान का आयोजन किया गया।

❖ **31 अक्तूबर 2020 – "राष्ट्रीय एकता दिवस"** - सरदार वल्लभभाई पटेल की जन्म शताब्दी के अवसर पर यह दिन मनाया गया तथा इस अवसर पर शपथ-ग्रहण की गई।

❖ **02 नवंबर 2020** – कर्नाटक राज्योत्सव समारोह – इस वर्ष कोविड-19 के कारण, बहुत ही साधारण एवं सरल तरीके से इसका आयोजन किया गया। डॉ. कै. शिवन अध्यक्ष, इसरो द्वारा अं.वि. के प्रांगण में ध्वजारोहण एवं संबोधन किया गया। प्रति वर्ष यह आयोजन काफी रंगारंग कार्यक्रमों से भरा होता था। परंतु इस वर्ष इसे सादगी से मनाया गया।

❖ **26 नवंबर 2020 – "संविधान दिवस"** – इस आयोजन के भाग के रूप में संविधान की प्रस्तावना को पढ़ा गया। इस अवसर पर सभी कर्मचारियां के लिए कन्नड़, हिंदी, अंग्रेजी भाषा में आशुभाषण एवं निबंध लेखन प्रतियोगिता का आयोजन किया गया।

❖ **11 जनवरी 2021 – "विश्व हिंदी दिवस"** –इस अवसर पर कर्मचारियों के लिए "तस्वीर क्या बोलती है" प्रतियोगिता का संचालन किया गया। यह प्रतियोगिता हिंदी तथा हिंदीतर वर्ग के कर्मचारियों के लिए अलग-अलग रूप से किया गया।

❖ **1 से 15 फरवरी 2021 – स्वच्छता पखवाड़ा** – इस दौरान 01 फरवरी 2021 को सभी कर्मचारियों ने शपथ ग्रहण की। 09 फरवरी को सभी के लिए ऑनलाइन प्रश्नोत्तरी प्रतियोगिता संचालित की गई।

❖ **8 मार्च 2021 – "अंतरराष्ट्रीय महिला दिवस समारोह" -** इस वर्ष अंतरिक्ष भवन में अंतरराष्ट्रीय महिला दिवस का आयोजन सीमित रूप से किया गया। कोविड-19 वैश्विक महामारी के परिदृश्य में कर्मचारियों ने इस कार्यक्रम से ऑनलाइन माध्यम से भाग लिया। इस अवसर पर मुख्य अतिथियों तथा मंचासीन गणमान्यों ने अपने विचार व्यक्त किए। साथ ही इस वर्ष सेवानिवृत्त होने वाली महिला कर्मचारियों को सम्मानित किया गया। डॉ. कै. शिवन, अध्यक्ष, इसरो के कर-कमलों द्वारा इन सभी महिला कर्मचारियों को स्मृति चिह्न प्रदान किए गए।

राज्योत्सव की झलकियां

संयुक्त हिंदी पखवाड़ा
संयुक्त हिंदी पखवाड़ा
हिन्दी दिवस

खुशहाल सेवानिवृत जीवन की शुभकामनाएं : मई 2020 से मार्च 2021 तक

अं.वि./इसरो मु. के अधिकारियों/कर्मचारियों की सूची: श्रीमती/श्री

	बी.आर. गुरूप्रसाद वैज्ञा./अभि.-एस.जी. 31.05.2020		एस. जयश्री एस.पी.एस. 31.05.2020
	जी. मंगलम वैज्ञा./अभि.-एस.जी. 30.06.2020		के. शशिकला एस.पी.एस. 31.07.2020
	टी. हनुमंतैय्या व.परि. .एल.वी.डी.-सी 31.08.2020		एस. अमुदा पी.एस. 30.09.2020
	वी. श्रीकुमार वरि. एल.वी.डी.-बी 30.09.2020		बी.सी. अनुराधा एस.पी.पी.एस. 31.12.2020
	शामला सी.पी. वैज्ञा./अभि.-जी. 28.02.2021		शांति शांताराज व.परि.सहायक 28.02.2021
	एम.एस. भारद्वाज व.परि.सहायक 31.03.2021		सुमा के.एस. व.परि.सहायक 31.03.2021

सुस्वागतम्

दिशा टीम इन सभी अधिकारियों/ कर्मचारियों का अंतरिक्ष भवन में हार्दिक स्वागत एवं उनके उज्ज्वल भविष्य की कामना करती है।

अं.वि./इसरो मु. के अधिकारियों/कर्मचारियों की सूची: श्रीमती/श्री

	मुमिमडिवरपु विनय सहायक 19.06.2020		अदारी राजेन्द्र एस.वी.डी.-ए 24.06.2020
	मो. फहिम क.वै.सहायक 13.07.2020		रंगानाथ एच.आर. क.वै.सहायक 17.07.2020
	अनिकेत अंकुर सहायक 22.07.2020		जे. आई. अजीतभाई एल.वी.डी.-ए
	शिवानी पोद्दार क.वै.सहायक 28.08.2020		पिंटू कुमार यादव क.वै.सहायक 28.08.2020
	बोद्दुरू रवि कुमार क.वै.सहायक 28.08.2020		मनीष कुमार आशुलिपिक 31.08.2020

	अदाला सूर्या तेजस्विनी क.वै.सहायक 02.09.2020		रोहित दास क.वै.सहायक 21.09.2020
	अकाशम वेंकटेश क.वै.सहायक 21.09.2020		जीतेंद्र कुमार क.वै.सहायक 29.09.2020
	खुशबू मिश्रा आशुलिपिक 21.09.2020		निशा कुमारी क.वै. सहायक 21.10.2020
	शेल्के नंदकुमार भाऊ साहेब आशुलिपिक 06.10.2020		प्रियंका अशोक जाधव क.वै. सहायक 10.11.2020
	सइद हम्माद अनवर क.वै.सहायक 23.12.2020		अभिषेक कुमार मिश्रा सहायक 09.11.2020
	ध्रुव चंदन सहायक 07.12.2020		

"दिशा के 11वें अंक पर पाठकों की प्रतिक्रियाएं"

'दिशा के 11वें अंक पर हमें अनेक प्रबुद्ध पाठकों की ढ़ेर-सारी प्रतिक्रियाएँ प्राप्त हुईं। जगह की कमी के कारण इन सभी प्रतिक्रियाओं को, उनके संक्षिप्त रूप में, यहाँ प्रकाशित किया गया है।

मैं पूरी निष्ठा से सम्पादकीय समिति के उत्कृष्ट प्रयासों की तथा विभिन्न लेखकों द्वारा समृद्ध किए 'दिशा' के ग्यारहवे अंक की अंतर्वस्तु की सराहना करता हूं। यह कर्मचारियों और उनके परिवारों में छिपी प्रतिभा को उजागर करने का एक अच्छा और सच्चा मंच है।

जी. चंद्रशेखर, प्रधान, कार्मिक एवं सामान्य प्रशासन, इस्ट्रैक- बेंगलूरु

पत्रिका में उत्कृष्ट एवं ज्ञानवर्धक लेख हैं। पत्रिका का संकलन, संपादन एवं प्रस्तुतीकरण सराहनीय है। 'कर्ण की व्यथा' का अत्यंत मार्मिक एवं भावपूर्ण वर्णन आज के परिपेक्ष्य में भी अवसादग्रस्त लोगों के लिए प्रकाश स्रोत समान है। 'गाँठें : कुछ उलझी, कुछ सुलझी' के माध्यम से लेखिका ने रिश्तों की स्नेह रुपी गाँठों को सहेजने का सुंदर संदेश दिया है। विभागीय राजभाषा हिंदी की गतिविधियों की विस्तृत जानकारी भी उपलब्ध है।

मिर्ज़ा मोहम्मद ज़हीर, उप महाप्रबंधक, इस्ट्रैक, लखनऊ

हमेशा की तरह इस बार भी यह विशेषांक विविध लेख, कविताएं आदि समेटे है। श्री गोविंदराजु वी. का लेख **रॉकेट मैन....** माननीय डॉ. कै. शिवन जी के संघर्षमयी जीवन से हमारा परिचय करा रहा है। श्री निशांत कुमार शर्मा का लेख **बरमुडा त्रिकोण...** रहस्यमयी तथ्यों को उजागर करता है। श्री तपन कुमार का लेख **हमें अपने घर...** कोरोना काल में जूझते श्रमिकों की व्यथा और उससे निपटने की जारकारी प्रदान करता है। श्रीमती पद्मा एन. का लेख **लाख दु:खों की...** स्वस्थ और सुखद जिंदगी जीने के उपायों को ज्ञात करा रहा है। पत्रिका में **गांठे: कुछ..., भारत की धरोहर, हमारी संस्कृति, जीवन, ये गृहिणियां... शून्य** जैसे लेख एवं कविताएं काफी मनोरंजक एवं संग्रहणीय हैं। पत्रिका में विभिन्न कार्यक्रमों की झलकियां पत्रिका को और भी दीप्तिमान कर रही हैं।

एम.जी. सोम शेखरन नायर, व. हिंदी अधिकारी, विक्रम साराभाई अंतरिक्ष केंद्र

यह अंक पिछले अंकों से कहीं अधिक सुंदर बन पड़ा है। अंक-दर-अंक पत्रिका में काफी निखार आता जा रहा है। विविध विषयों पर रचनाओं का अनोखा संगम देखने को मिला इस अंक में। 'कर्ण की व्यथा' बहुत ही अच्छी रचना है। कविता में अनुप्रास की छटा देखते ही बनती है। रचनाकार ने, एक हिंदीतर भाषी होते हुए भी, शब्दो का अत्यंत सुंदर चयन किया है। कुछ उलझी, कुछ सुलझी' शीर्षक वाला लेख बहुत ही मार्मिक है। 'शिल्पपादिकम', 'बरमुडा त्रिकोण का रहस्य', आदि लेख बहुत ही सूचनाप्रद हैं, तो कुछ उपदेशात्मक एवं प्रेरक रचनाएँ भी पढ़ने को मिलीं जैसे, 'ईमानदारी की विवशता', 'शून्य', 'सकारात्मक विचार', वहीं 'गर इजाज़त हो' शीर्षक वाली कविता वर्तमान परिप्रेक्ष्य में समीचीन लगी। पत्रिका में, संप्रति में फैली सबसे कष्टकर विश्व महामारी 'कोरोना' से बचने पर भी रचनाओं को स्थान दिया गया है।

डीनू रानी, व. हिंदी अधिकारी, समानव अंतरिक्ष उड़ान केंद्र

पत्रिका में प्रकाशित लेख उत्कृष्ट एवं ज्ञानवर्धन हैं। पत्रिका में केंद्र की राजभाषा गतिविधियों की सुंदर प्रस्तुति की गई हैं। 'जीवन' कविता जीवन की सच्चाई को बयां करती है। प्रकृति कविता हृदयस्पर्शी है। 'ईमानदारी की विवशता' लेख हमें जीवन में ईमानदार बनने के लिए प्रेरित करती है।

नीलू सेठ, व. हिंदी अधिकारी, अंतरिक्ष उपयोग केंद्र (सैक)

पत्रिका में विविध विधा की सृजनात्मक प्रतिभा अभिव्यक्त हुई है। पत्रिका में प्रकाशित सभी लेख व कविताएं, अत्यधिक रोचक, ज्ञानवर्धक और प्रेरणादायक हैं। पत्रिका का संकलन, संपादन एवं प्रस्तुतीकरण अनुकरणीय है। पत्रिका के सफल संपादन एवं प्रकाशन से जुड़े प्रत्येक व्यक्ति बधाई के पात्र हैं।

आर. महेश्वरी अम्मा, हिंदी अधिकारी, इसरो जड़त्वीय प्रणाली यूनिट

पत्रिका में प्रकाशित सभी लेख, कविताएं और अन्य रचनाएँ अत्यंत सारगर्भित, ज्ञानवर्धक, प्रेरणा प्रदान करने वाली और रोचक हैं। कुछ लेख जैसे कि 'हमें अपने घर जाना है', इसमें किसानों की आर्थिक स्थिति सुधारने संबंधित उपायों का उत्कृष्ट वर्णन किया गया है। इसी प्रकार 'ईमानदारी की विवशता' हमारे व्यक्तित्व में नैतिकता/संस्कारों को बढ़ाने और मन पर अमित छाप छोड़ने वाला लेख है।

सतेंद्र कुमार, मुख्य तकनीकी अधिकारी एवं प्रभारी हिंदी प्रकोष्ठ,राष्ट्रीय कृषि कीट संसाधन ब्यूरो

पत्रिका में प्रकाशित सभी रचनाएं पठनीय, संग्रहणीय, अत्यंत ज्ञानवर्धक तथा सूचनाप्रद है। पत्रिका की साज-सज्जा मनमोहक एवं उत्तम है। 'दिशा' के संपादक मंडल को शुभकामनाएं।

डॉ. टी. विजय शेखर, कनिष्ठ हिंदी अनुवादक

आपके प्रोत्साहन एवं प्रतिक्रियाओं के लिए दिशा की संपादकीय समिति प्रत्येक के प्रति आभार व्यक्त करती है।

राजभाषा कीर्ति पुरस्कार द्वारा सम्मानित :: अंतरिक्ष विभाग

यह बड़ी ही खुशी एवं गर्व की बात है कि लगातार पाँच वर्षो से अंतरिक्ष विभाग को यह प्रतिष्ठित पुरस्कार प्राप्त हो रहा है।

वर्ष 2015-16
द्वितीय

महामहिम राष्ट्रपति के कर कमलों से वर्ष 2015–16 के लिए अंतरिक्ष विभाग को राजभाषा कीर्ति (द्वितीय) पुरस्कार प्राप्त करते श्री किरण कुमार, सचिव अंतरिक्ष विभाग

वर्ष 2016-17
प्रथम

महामहिम राष्ट्रपति के कर कमलों से वर्ष 2016–17 के लिए अंतरिक्ष विभाग को राजभाषा कीर्ति (प्रथम) पुरस्कार प्राप्त करती श्रीमती वंदिता शर्मा, अपर सचिव, अंतरिक्ष विभाग

वर्ष 2017-18
तृतीय

माननीय उप राष्ट्रपति श्री वेंकैया नायडु जी के कर कमलों से वर्ष 2017-18 के लिए
श्री एस. कुमारस्वामी, संयुक्त सचिव, अंतरिक्ष विभाग राजभाषा कीर्ति (तृतीय) पुरस्कार ग्रहण करते हुए

वर्ष 2018-19
प्रथम

माननीय गृहमंत्री श्री अमित शाह जी के कर कमलों से वर्ष 2018-19 के लिए अंतरिक्ष विभाग को राजभाषा कीर्ति पुरस्कार (प्रथम) प्राप्त हुआ। पुरस्कार ग्रहण करती हुई श्रीमती संध्या वेणुगोपाल शर्मा, संयुक्त सचिव, अं.वि.।

वर्ष 2019-20
प्रथम

(कोविड-19 के कारण समारोह का आयोजन नहीं हो सका)

नाविक - भारतीय प्रादेशिक नौवहन प्रणाली

7 प्रचालनात्मक उपग्रह - भू-स्थिर कक्षा में 3 तथा भूतुल्यकाली कक्षा में 4

नाविक भारत तथा भारत के आसपास 1,500 कि.मी. तक फैले क्षेत्र में सटीक वास्तविक-समय में अवस्थिति एवं कालन सेवाएं मुहैया कराती है।

इसरो isro

अंतरिक्ष यात्राएं

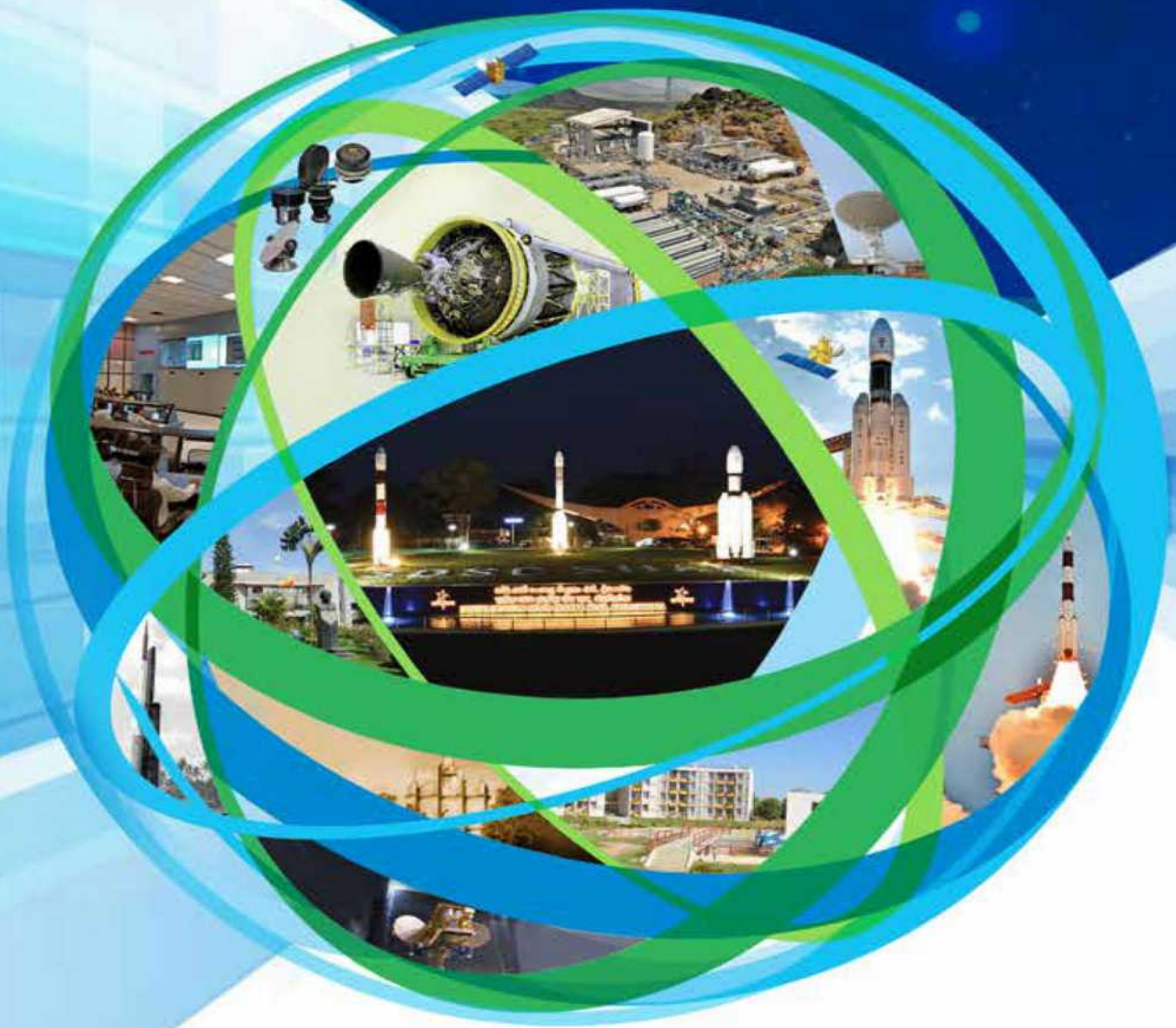

"हमारे वैज्ञानिकों का परामर्श हमारे लिए अनमोल है। हमारे संसाधनों को हमें अपने तक ही सीमित रखना होगा"

डॉ. विक्रम अंबालाल साराभाई